RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

युवा वर्ग को दिशा देने में स्पिक मैके की भूमिका

रवि प्रकाश

रिसर्च स्कॉलर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
अराजनैतिक कलात्मक, सांस्कृतिक, विरासत

ABSTRACT

स्पिक मैके एक ऐसी संस्था है जो भारतीय संगीत कला, संस्कृति को युवा वर्ग तक पहुँचाने में कार्यरत है। यह एक अराजनैतिक बिना किसी लाभ के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाली संस्था है जो कि एक जन आंदोलन है। आज का युवा वर्ग पाश्चात्य वर्ग की तरफ मुँह उठाकर देखता है और अपने देश की कलात्मक, सांस्कृतिक, विरासत को भूलता जा रहा है। इस लेख के माध्यम से स्पिक मैके द्वारा संचालित कार्यक्रम के द्वारा युवा वर्ग को अपनी मूल संस्कृति की ओर अग्रसर करना पर प्रकाश डालना है।

भूमिका-

संगीत, व समाज का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अगर यूं कहा जाए संगीत समाज का प्रतिबिम्ब है तो गलत नही होगा। यदि हम किसी देशकाल के बारे में जानना चाहते है तो संगीत के माध्यम से हमें उस देश की सांस्कृतिक विरासत, धरोहर मूल्यों विचारधारा के बारे पता चल सकता है। समय के पहिये के साथ–साथ संगीत में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में संगीत पर भी प्रभाव पड़ा है। तकनीकी क्षेत्र में तरक्की के कारण संगीत का आदान–प्रदान करना तो सहज हो गया है परन्तु इसका प्रतिकूल प्रभाव भी भारतीय संगीत पर पड़ा। संगीत एक मौखिक विद्या है जो गुरु के सान्धिय में रहकर सीखी जाती है। परन्तु वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा गतिशीलता के इस दौर में गुरू–शिष्य परम्परा का ह्रास होता जा रहा है। हमारी सांस्कृतिक विरासत कला, धरोहर विलुप्त होने की कगार पर है। आज अगर किसी बच्चे को बॉलीवुड हॉलीवुड के किसी अभिनेता का नाम पूछा जाए तो वह पलक छपकते ही बता देगा। परन्तु किसी महान शास्त्रीय संगीतज्ञ का नाम पूछ लिया जाए तो उसके पास जबाब नही होगा। इस हास होती संस्कृति को बचाने का विचार एक दिन I.I.T के प्रो. किरण सेठ के दिमाग में आया। जब उन्होंने पूरी भरी कक्षा में बच्चों से निखिल बनर्जी जी का नाम पूछा तो किसी के पास कोई उत्तर नही था। यह बात प्रो. किरण सेठ के मन में टीस पैदा कर गई और उन्होंने सोचा कुछ करना चाहिए इसी विचार से स्पिक मैके का जन्म हुआ। स्पिक मैके ने विधिवत तरीके से 1977 में अपना कारवा शुरू किया। स्पिक मैके की महत्वाकांक्षी शुरूआत 1972 में उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर के न्यूयार्क के स्थित ब्रुकलिन अकेडमी ऑफ म्यूजिक के एक समारोह में हुई। सन् 1972 से 1976 तक इण्डिया क्लब ऑफ कोलम्बिया विश्वविद्यालय की देख–रेख में कुछ कालांक्षिक समारोह हुए, जिनमें से एक उस्ताद अली अकवर खाँ का न्यूयार्क स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय का था। स्पिक मैके 1977 में अपने उद्देश्य के अनुरूप सही दिशा ले चुका था। Mechanical Engineering Final Year Students के समारोह में स्पिक मैके का सर्वप्रथम नामकरण किया गया। स्पिक मैके का लक्ष्य पाश्चात्यकरण का विरोध नही अपितु सांस्कृतिक पुनर् स्थापना करना है।

आरम्भ से ही यह ध्यान रखा गया कि यह एक संस्था भर न रह जाए बल्कि पूरे देश में एक जन आंदोलन का रूप ले। यद्यपि इसकी शुरूआत धीमी रही, परन्तु धीरे–धीरे इस आन्दोलन ने एक सही दिशा ग्रहण की एवं इसे संपूर्ण देश से सकारात्मक प्रतिक्रिया भी प्राप्त होने लगी। स्पिक मैके के इस आन्दोलन में अभूतपूर्व प्रगति हुई। आज इसकी शाखाएँ विदेशों में भी सक्रिय है। यह बिना किसी निजी स्वार्थ के परिपूर्ण जागरूक युवाओं द्वारा संचालित सक्रिय आन्दोलन है।

यह एक संगठन मात्र ही नही एक आन्दोलन है जो छात्रों का, छात्रों के लिए, छात्रों द्वारा ही संचालित होता है। यदि व्यक्ति को अपना सम्पूर्ण विकास करना है तो यह भी जरूरी है कि वह अपनी जड़ो से जुड़ा रहे।

स्पिक मैके का मुख्य उद्देश्य आज के युवाओं को भारतीय पारम्परिक संस्कृति के मूल रूप से परिचित कराना है ताकि वे अपनी संस्कृति के गरिमापूर्ण सौन्दर्य एवं वैभवशाली समृद्ध कलाओं की महिमा को सिर्फ जाने ही नही, अपितु आत्मसात भी करे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर स्पिक मैके निम्न कार्यक्रमों को आयोजित कर रही है।

1. **व्याख्या और प्रस्तुति**– स्पिक मैके ने इस बात का अध्ययन किया कि यदि हम अपनी परम्परागत शैलियों को जीवंत करना व रखना चाहते है तो उनको क्रियान्वन के साथ साथ सम्भाषण देना चाहिए। जब एक बच्चा क्रिमात्मक पक्ष को देखता है तो उसके मन में तमाम सवाल पैदा होते है। उन सवालों का जवाब मिलने पर ही उसकी ज्ञान की प्यास शांत हो सकती हैं जब मंच पर कलाकार को संसम्मान बिठाया जाता है। तो अपनी प्रस्तुति देने से पहले वह विषय पर व्याख्यान देते है। अपने संबंधित विषय को सम्पूर्ण तरीके से श्रोताओं के समक्ष रखते हैं। तत्पश्चात् प्रस्तुतिकरण किया जाता है। फिर बाद में सवाल जवाब का सिलसिला होता है। श्रोताओं के मन में किसी भी तरीके का सवाल हो तो वह निसंकोच पूछ सकता है और उसको सभी प्रश्नों का यथासम्भव उत्तर मिलेगा। कलाकार छोटी से छोटी बात को भी बड़ी सहजता, सरलता से समझाते है। कार्यक्रम के दौरान इस बात का ध्यान रखा जाता है कि बैठक मुद्रा में आसीन श्रोता, बाहर

सिलसिलेवार जमें हुए जूते, चप्पल, मोबाइल फोन की अनुपस्थिति, प्रस्तुति के समय हलचल और खुसर–फुसर विहीन स्थिति, फ्लैश फोटो का अभाव और तालियों की आवाज की रिक्तता–ऐसा वातावरण निर्मित करती है जहाँ कलाकार और रसिक दोनों, रसास्वादन के उच्चतम शिखर का स्पर्श कर सके।

कार्यशालाएँ

स्पिक मैके विभिन्न कला व शिल्प से सम्बंधित कार्यशालाएँ आयोजित करता है कला व शिल्प को सीखाने के लिए अनुकूल वातावरण को तैयार किया जाता है जो देखने में मोहक होता है। जैसे साज–सज्जा आदि। इन कार्यशालाओं में इच्छुक विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर की जानकारी दी जाती है जिससे उनका कला से वास्तविक सम्बन्ध स्थापित हो जाएँ। इनके अन्तर्गत गायन, वादन, नर्तन, शिल्प, योग आदि कलाओं को शामिल किया जाता है जैसे पुरातन समय में एक योग्य गुरू के पास बैठकर सीखा जाता था ठीक उसी प्रकार एक सुयोग्य गुरू द्वारा बच्चों को इन सभी कलाओं का बारीकी से ज्ञान दिया जाता है। इस प्रकार की कार्यशालाएँ बच्चों के ज्ञानवर्धन व नवीनीकरण में बहुत उपयोगी होती है। एक तो सांस्कृतिक कलाओं को प्रोत्साहन मिलता है दूसरा कलाओं को बारीकी से जानने का मौका। स्पिक मैके की कार्यशालाओं में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि अनुशासित तरीके से बच्चों को अधिकतम सीखने का अवसर मिल सके।

वार्ताएं

स्पिक मैके ने इस बात पर ध्यान दिया कि यदि समय रहते हमारे मन में उठने वाले सवालों को शांत करके सही दिशा दी जाएँ तो यह एक बच्चे के निर्माण में बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। स्पिक मैके कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित अपने–अपने क्षेत्र में विशेषज्ञों को वार्ता में शामिल करता है। ये प्रतिष्ठित व्यक्ति संगीत गायन, वादन, नर्तन, शिल्प, चित्रकला, लेखन, फिल्म, अभिनय आदि विधा से सम्बन्धित होते है। इस वार्ता का उद्देश्य जन–मानस में उठते प्रश्नों का उत्तर देना है व सही दिशा की ओर उन्मुख करना है। यदि हम किसी कला, शिल्प से सम्बंधित प्रश्न अपने मन में लिए बैठे है तो हमें किसी कला के पारखी, विशेषज्ञ से सम्पर्क करना पड़ेगा ताकि हमें हमारा उचित उत्तर मिल सके और इसकी व्यवस्था स्पिक मैके वार्ता ने अपने कार्यक्रमों में कर दी है। स्पिक मैके वार्ता के दो लाभ है – एक तो हमारे मन के प्रश्नों का सही समाधान मिलता है दूसरा राष्ट्र की महान विभूतियों को नजदीक से देखने, सुनने, समझने का सुअवसर प्राप्त होता है। स्पिक मैके वार्ता से अथाह ज्ञान की प्राप्ति होती है जिससे जीवन नवसंचार नव–निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

गुरुकुल अनुभव स्कॉलरशीप स्कीम

स्पीक मैके द्वारा संचालित गुरुकुल अनुभव स्कॉलरशीप स्कीम बच्चों को एक महीने तक योग्य गुरु के पास रहने का सुनहरी मौका देती है। इस स्कीम के तहत सुयोग्य गुरु का चयन करके सुपात्र बच्चों का साक्षात्कार द्वारा चयन किया जाता है। 13–26 आयु वर्ग के बच्चे आवेदन कर सकते है। मई, जून, जुलाई माह में से कोई एक महीना चुनकर सुपात्र बच्चों को गुरु के पास रहने का मौका मिलता है। गुरु अपने–अपने क्षेत्र के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के होते है जैसे एच.एच. दलाईलामा प. बिरजू महाराज, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, श्रीमति अरूणा राय आदि। जब एक बच्चा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के सानिध्य में एक महीना गुजारेगा तो स्वतः ही उसके मस्तिष्क में सुविचारों का सृजन होगा। जिस प्रकार फूलों के पास बैठकर हम स्वयं सुगन्धित महसूस करते है ठीक उसी प्रकार सुयोग्य गुरूओं का व्यक्तित्व भी बच्चे के जीवन में अहम भूमिका निभाता है। ये अविस्मरणीय पल उसके जीवन की दशा व दिशा बदलने में महत्वपूर्ण योगदान देते है। एक बच्चे के स्वाभाविक विकास के लिए यह जरूरी है कि उसे उसकी प्रतिभा के अनुकूल वातावरण मिले तभी उसकी प्रतिभा के पंख आसमान में उड़ान भर सकते है। गुरुकुल अनुभव स्कॉलरशीप स्कीम बच्चों को यथार्थ के धरातल पर अनुभव करने का मौका प्रदान करती है जिससे वह अपने उदगार, कला, ज्ञान का समुचित विकास कर सके। इस स्कीम के तहत बच्चों को बिल्कुल फ्री खाने–रहने का अवसर मिलता हैं गुरु की दिनचर्या के अनुकूल अनुशासन में रहकर, मोबाइल का प्रयोग न करके स्वयं सीखने पर बल दिया जाता हैं

विभिन्न संगठनों संस्थाओं के सहयोग से सहकार्य

स्पीक मैके विभिन्न संगठनो, संस्थाओं के सहयोग से भी कार्यक्रम का संचालन करता है जैसे पंजाब के जालन्धर में हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन के दौरान स्पीक मैके ने ऐसी व्यवस्था निर्मित की जिससे विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों के छात्र–छात्राओं को हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन देखने सुनने का मौका तो मिला ही साथ–साथ सांस्कृतिक, कलात्मक, योग से सराबोर होने का भी सुअसवर प्राप्त होता है। स्पीक मैके संस्था ने ब्च्चों के लिए उचित व्यवस्था व संसाधनों का प्रयोग करके संगीत, कला, योग का कार्यक्रम संचालित किया जिससे बच्चों को क्रियात्मक व सैद्धान्तिक पक्ष दोनों को नजदीक से जानने, समझने का मौका मिलता है। स्पीक मैके समय–दर–समय ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है जिससे बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने का मौका मिलता है। बच्चे किताबों से सैद्धान्तिक ज्ञान तो प्राप्त कर सकते है कला के सन्दर्भ में परन्तु सुयोग्य गुरू के सानिध्य मे ही कला को आत्मासात किया जा सकता है। कलात्मक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक रूप से गुणों को पनपने के लिए स्पीक मैके ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है।

युवा वर्ग की ऊर्जा को सही दिशा देने के लिए स्पीक मैके सांस्कृतिक,आध्यात्मिक,कलात्मक आदि कार्यक्रमों का सुन्दर आयोजन करती रहती है। निरन्तर 40 वर्षों से यह संस्था ग्रामीण, शहरी, देश, विदेश में काम कर रही हैं वर्तमान में इसका उद्देश्य 2021 तक देश के प्रत्येक बच्चे तक जुड़ना है व भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलूओं से अवगत कराना है। वर्ष भर में लगभग 4000–6000 कार्यक्रमों का आयोजन इस बात की ओर संकेत करता है कि यह संस्था कितनी शिद्त से भारतीय संस्कृति व विरासत का प्रचार–प्रसार कर रही है। स्पीक मैके की बार्षिक गतिविधि रिपोर्ट के आधार पर 2011–2012 में 4463, 2012–2013 में 6241, 2014–2015 में 3913, 2016–2017 में 2977 2017–2018 में 4124 कार्यक्रमों को आयोजित किया गया।

हेरिटेज वॉक (विरासत की पैदल यात्रा)

स्पीक मैके के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हमारी विरासत के दर्शन करवाऐ जाते है। जैसे किसी एक भारतीय विरासत का केन्द्र चुनकर, बच्चों को भ्रमण करवाया जाता हैं जब बच्चों द्वारा विरासत का दिग्दर्शन किया जाता है तो उनमें मूल्यों विचारों चेतना का सृजन होता है। जब हम किसी चीज को देखते जानते, समझते है तो तभी हमें उसकी उपयोगिता, महत्ता का पता चलता है। विश्व की पुरातन संस्कृतियों में से एक है – भारतीय संस्कृति व विरासत। हेरिटेज वॉक बच्चों में सद्भावना मैत्री का गुण तो विकसित करती है साथ–ही–साथ हम हमारी महान विरासत के दर्शन करके अपने आपको गौरवान्वित भी महसूस करते है। हेरिटेज वॉक ऐसे ही गुण बच्चों में रोपित करने का काम करती है जिससे उनका चारित्रिक नैतिक, बौद्धिक आध्यात्मिक, कलात्मक, सांस्कृतिक विकास हो सके।

निष्कर्ष

स्पिक मैके एक संस्था मात्र न होकर एक जन आंदोलन है जो किसी लाभ के उद्देश्य से काम नही करती है। यह एक स्वयंसेवी संस्था है जिसमें ध्येय के साथ काम किया जाता है। स्पिक मैके के विविध कार्यक्रम जैसे लेक–डेम, वार्ताएं व कार्यशालाएँ आज की युवा पीढ़ी को सही दिशा में ऊर्जावान करती है। जहां वार्ता एक तरफ बच्चों के मन में एक बीज पैदा करती है तो दूसरी तरफ उसी बीज को पूर्ण रूप से पनपने का सुअवसर कार्यशालाएँ करती है। युवा वर्ग के पास ऊर्जा है उसको दिशा देने में स्पिक मैके के कार्यक्रम अहम रोल अदा करते है। किसी भी कला को नजदीक से जानने, समझने का सुअवसर इन कार्यक्रमों में मिलता है। प्राच्य भारतीय संस्कृति जो विश्व की सर्वसम्पन्न संस्कृति है, ऐसी संस्कृति का युवा वर्ग में प्रचार–प्रसार स्पिक मैके सही दिशा, सही सोच से कर रही है। अतः स्पिक मैके का युवा वर्ग में भारतीय संस्कृति कला को रोपित करने में अहम भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. An Interview with Prof.Kiran Seth, IIT Delhi September 2018
2. Sandesh To INFORM & INSPIRE, January 2015
3. Sandesh To INFORM & INSPIRE, 3May 2016
4. SPICMACAY 2nd International Convention Chennai, Tamil Nadu June 2014
5. Sounvenir, SPICMACAY Delhi, 2017
6. Shabdam, Hind Lamps Parisar, Shikohabad
7. https://www.thehindu.com/todays-paper/tp-national/tp-kerala/SPICMACAY-to-focus-on-a-younger-age-group/article14873954.ece
8. http://www.spicmacay.com/sites/default/files/sandesh_may_2016_final.pdf
9. http://www.spicmacay.com/article-category/conceptual